अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महिला सम्मेलन का आयोजन

महिलायें... मानवता के उत्थान के लिए

उप क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. गोदावरी दीदी के साथ कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर शहर की गणमान्य महिलायें।

मुंबई-भांडुप वेस्ट। मैंने कई कार्यक्रमों में भाग लिया है लेकिन आज इतनी महिलाओं के मध्य में ऐसी शांति की अनुभूति मैं पहली बार कर रही हूँ। इस तरह के आध्यात्मिक कार्यक्रम में अगर हम समय को सफल करेंगे तो हमारा समग्र विकास भी होगा और समाज के विकास में भी हम मददगार बन सकेंगे।

उक्त विचार 'शब्दवेल साहित्य प्रतिष्ठान' वसई-महाराष्ट्र की **सुप्रसिद्ध लेखिका एवं कवयित्री पल्लवी बनसोडे** ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

गायिका एवं गीतकार ज्योति मातवनकर ने कहा कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जहाँ नारी का पूजन होता है वहाँ देवतायें भी रमन करते हैं। आदिकाल से ही भारतीय नारी की महिमा शास्त्रों में वर्णन की गई है। तभी तो नर से पहले नारी का नाम लिया जाता है, जैसे लक्ष्मी - नारायण आदि। इतना ही नहीं बल्कि धरती को भी धरती माता कहा जाता है।

भांडुप वेस्ट सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. लाजवंती ने कहा कि आदिकाल से नारी का शक्ति के रूप में गायन और पूजन होता है। लेकिन समयांतर के बाद उसे कमज़ोर माना जाने लगा। लेकिन अब पुन: शक्ति स्वरूपा बन जीवन जीना है, तभी हम अपना वो ही सम्मान प्राप्त कर सकेंगे।

ब्र.कु. गोदावरी दीदी,उप क्षेत्रीय संचालिका ने कहा की नारी आज रिक्शा से लेकर शिक्षा, ट्रेन चलाने से लेकर प्लेन उड़ाने तक अनेक क्षेत्रों में पुरुषों से भी आगे जा रही है। लेकिन यदि उनमें आध्यात्मिकता की खुशबू भर जाये तो सोने पर सुहागा हो जाये। इसीलिए परमात्मा इस भारत भूमि पर अवतरित होकर महिलाओं का उत्थान कर विश्व परिवर्तन कर रहे हैं।

कार्यमक्र में समाज सेविका जयश्री शाह, नगरसेविका दीपमाला बढे, नगरसेविका जागृती पाटिल , एआयएफटी की संचालिका सीमा क्षीरसागर आदि ने भी अपने -अपने विचार व्यक्त किये। सस्था का परिचय ब्र.कु. सरला ने दिया तथा कार्यक्रम का सुन्दर सूत्रसंचालन ब्र.कु. हर्षा ने किया। स्वागत नृत्य कुमारी विशाखा ने प्रस्तुत किया। इस समय भारी संख्या में महिलायें उपस्थित थीं।

नारी बदलेगी - नया समाज गढ़ेगी

भिलाई नगर-छ.ग.। महिला प्रभाग द्वारा पीस ऑडिटोरियम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'नारी बदलेगी - नया समाज गढ़ेगी' विषय पर महिला संगोष्ठी के आयोजन पर मुख्य रूप से सभी वर्गों, सभी धर्मों की महिला प्रतिनिधियों सहित, शिक्षा, चिकित्सा क्षेत्र एवं गृहणियों ने शिरकत की।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. प्राची ने बताया कि दीवार की घड़ी रोज़ चौबीस घंटे में अपना एक चक्र पूरा करती है, इसी प्रकार इस सृष्टि रूपी घड़ी में भी अब भारत सहित विश्व को परिवर्तन करने का समय आ गया है। विश्व का परिवर्तन तभी संभव होगा जब हम स्वयं का परिवर्तन करेंगे। पुन: एक मूल्य आधारित मानव समाज का निर्माण होगा। उन्होंने कहा कि नारी रिश्तों को निभाने वाली अद्भुत मिसाल है। नारी शब्द का अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि 'ना' अर्थात् नाज़ करूं अपनी शक्ति पर, 'री' अर्थात् रिश्ता है मेरा ईश्वर के साथ।

गायत्री शक्ति पीठ की मंगला भराडे ने कहा कि विश्व में आधी जनसंख्या नारी शक्ति की है। बाल्य काल से ही हमें बच्चों को मूल्यों की शिक्षा देनी है।

ईसाई समाज की प्रतिनिधि के रूप में **विनिता थॉमस** ने कहा कि हम अगर अपने को सुपर वुमेन समझते हैं तो अन्य विशेषताओं के साथ अपने अंदर छिपी सुपर पॉवर को भी समझें। ये तभी संभव है जब हम आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख होंगे। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि राजयोग से मुझे अहंकार और चिंता जैसी विकृतियों से मुक्ति मिली।

ब्र.कु. आशा के साथ कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए गणमान्य महिलायें।

ईसाई समाज की **एस . जे . फिस्ज** ने कहा कि आज महिला ही महिला की विरोधी बन गई है। प्रभु का साथ है तो कोई विरोधी नहीं हो सकता।

मुस्लिम समाज से नादिरा यास्मिन ने कहा कि नारी के विभिन्न रूपों में सबसे अच्छा रूप माँ का होता है। माँ बच्चों के लिए पहला मदरसा होती है। बच्चों से कुछ भी गलती होती है तो उसकी ज़िम्मेवारी माँ की होती है। सभी क्षेत्रों में धैर्यता की आवश्यकता है।

भिलाई सेवाकेन्द्रों की मुख्य संचालिका ब्रह्माकुमारी आशा ने कहा कि परिवर्तन का प्रारंभ नारी से होता है। आज लोगों के पास परचिंतन के लिए समय है लेकिन आत्मोन्नति के लिए समय नहीं। उन्होंने आध्यात्मिकता प्रति स्वयं को समय देने और सत्य की राह पर चलने का दृढ़ संकल्प कराया।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. माधुरी ने कहा कि जब नारी स्वयं ही स्वयं को सम्मान देगी तो वो स्वत: ही सम्मानीय हो जायेगी। इसके लिए हमें नहीं, मुझे आज और अभी से शक्ति स्वरूपा बनना है। जिसका सभी को राजयोग द्वारा अनुभव कराया गया। कार्यक्रम का सुंदर मंच संचालन ब्र.कु. साक्षी ने किया। डिवाईन ग्रुप की काव्या ने शक्ति का नाम नारी है गीत पर सुंदर स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। पोषण भाई और कृतिका बहन ने मधुर गीत की प्रस्तुति दी।

नारी समाज की अमूल्य ज्योति

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'नारी समाज की अमूल्य ज्योति' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर **ब्र.कु. सरिता** ने कहा कि नारी समाज की वह ज्योति है जिससे सारा संसार रोशन होता है। परमात्मा में भी माँ समाया हुआ है, इसीलिए माँ में भी परमात्मा जैसे दिव्य गुणों का भण्डार निहित है, उसे सिर्फ उजागर करने की ज़रूरत है। यदि हम स्थाई परिवर्तन चाहते हैं, तो आध्यात्मिक शक्ति की आवश्कता है। इसके लिए रोज़ सवेरे स्वयं को सम्मान दें, मैं एक महान, एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ। सम्मान मांगने की चीज़ नहीं है, परंतु सम्मान से जीना ज़रूरी है। सशक्त महिला का सम्मान स्वत: होता है। **लीना कोसम,अपर कलेक्टर** ने कहा कि समाज में होने वाली सभी प्रकार की बुरी घटनाओं का जन्म मन के विचारों से होता है। जब तक विचारों में पवित्रता नहीं आती, तब तक परिवर्तन संभव नहीं है। यदि हम सारा दिन इन्टरनेट, सोशल मीडिया आदि इन्हीं बातों में लगे रहेंगे तो स्वयं पर कब ध्यान देंगे।

अपर कलेक्टर लीना कोसम तथा अन्य गणमान्य महिला अतिथियों के साथ मंचासीन हैं ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. सरस।

महिला दिवस का यह मतलब नहीं कि महिलाओं को पुरूषों से मुकाबला कर उनसे बड़ा बनना है। महिला और पुरूष समाज के दो पहिए की तरह हैं, दोनों पहियों में समानता और संतुलन होगा तभी समाज तरक्की की राह पर आगे बढ़ सकता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान एक महिला प्रधान ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक संस्थान है। जिससे ही समाज में सही मायने में परिवर्तन आयेगा।

मुख्य वक्ता ब्र.कु. सरस ने कहा कि ज्ञान, धन और शक्ति सभी आवश्यकताओं के लिए नारी को ही आगे किया जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर प्राप्त सुख ही कल्याणकारी होता है। भारतीय संस्कृति की मज़बूती का आधार है आध्यात्मिकता, जिस संस्कृति का सारा संसार लोहा मानता था। लेकिन बाहरी भौतिक साधानों के प्रभाव व आकर्षर्ण में आकर हमने अपनी इस संस्कृति के महत्व को नहीं समझा। अब पुन: हम आध्यात्मिक ज्ञान और योग के माध्यम से वही गौरवशाली स्वर्णिम संस्कृति प्राप्त कर सकते हैं। **श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव, अध्यक्ष लायन्स क्लब** ने कहा कि प्राचीन सनातन संस्कृति ही नारी प्रधान रही है। नारी को प्रथम पूज्य, प्रथम गुरू का स्थान दिया गया है। लेकिन आज हमें ही नारी के सम्मान एवं सुरक्षा के लिए महिला दिवस, बेटी बचाव - बेटी पढ़ाओ जैसी योजना बनानी पड़ रही है। नारी यदि स्वयं ही सम्मान के साथ जियेगी तो समाज में भी सम्मान पायेगी।

श्रीमती प्रभा रावत,अध्यक्ष, महिला समाज ने कहा कि हमारे समाज और परिवार में बचपन से ही बच्चों के भीतर भेदभाव की भावना का बीज डाल दिया जाता है। हमें इस भेदभाव की भावना को समाप्त कर महिलाओं को उनकी योग्यता एवं क्षमता का वाजिब सम्मान दिया जाना चाहिए। जिस दिन ऐसा होता है, सच्चे मायने में वही महिला दिवस होगा। इस अवसर पर **श्रीमती तनूजा रायचुरा** का डिज़िटल इंडिया योजना में किए गए कार्यों के लिए सम्मान किया गया तथा आए हुए अतिथियों का सम्मान किया गया। मंच का संचालन कामिनी कौशिक ने किया। रेनू प्रकाश,जिला कार्यक्रम अधिकारी,महिला एवं बाल विकास सहित अन्य महिलाओं ने भी अपने विचार रखे।

मानवता को प्रकाशित रखने के लिए...

- ★ महिलायें पढ़ेंगी, गढ़ेंगी और आगे बढ़ेंगी
- ★ महिला कमज़ोर नहीं, कमाल करने वाली है
- ★ महिला मलिनता को दूर कर बने महान
- ★ बिना महिला मानवता भी सूनी
- ★ महान राष्ट्र के लिए महिलाओं का महा योगदान

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SRO/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Apr 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं अमर उजाला प्रेस द्वारा मुद्रित।